उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

के

शिक्षाशास्त्र विषय में डॉ० ऑफ फिलॉसफी (पी.एच -डी.) उपाधि हेतु प्रस्तावित शोधकार्य की शोध संक्षेपिका

पर्यवेक्षक

डॉ मो०आफाक हाशमी

एसोशिएट प्रोफेसर

डॉ ज़ाकिर हुसैन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज

लहरियासराय , दरभंगा , बिहार

शोधकर्त्ता

प्रिया कुमारी

PAT – 22060322

कौशल शिक्षा से सम्प्रेषण एवं अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों में आशाजनक परिवर्तन आता है। समस्या समाधान, विवेक सम्मत निर्णय, पहल, दक्षता आदि जीवन कौशल शिक्षा की देनप है जीवन का एकाकीपन सन्तुष्टि प्रदान करने वाले रचनात्मक कार्यों से परिपूर्ण होता है, न कि भौतिकता की चकाचौंध से स्वयं के बारे में चिन्तन, परिवार व समाज के बारे में चिन्तन तथा चिन्तन के पश्चात् सही निर्णय लेने की क्षमता जीवन कौशल शिक्षा प्रदान करती है।

कौशल विकास सामाजीकरण की प्रक्रिया है, जिसमें स्कूली शिक्षा भी शामिल है, का ही एक अभिन्न अंग है। अतः यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि एक विशेष समय पर विशेष शैक्षिक हस्तक्षेप से सभी प्रकार के कौशलों का विकास हो जाता है। यद्यपि कुछ-एक कौशलों यथा- यांत्रिक कौशलों के संदर्भ में यह सत्य हो सकता है किन्तु चिंतन कौशल या संप्रेषण कौशल जैसे कौशलों के विकास का श्रेय किसी विशेष शैक्षिक हस्तक्षेप को नहीं दिया जा सकता। यही कारण है कि कौशल विकास सदैव ही नये सिरे से कौशल विकास की प्रक्रिया नहीं हो सकती। अर्थात् एक व्यक्ति में कोई कौशल विकास पहले से विद्यमान हो सकता है और उसके पास किसी विशेष परिस्थिति में इसके प्रयोग की योग्यता भी हो सकती है किन्तु किसी दूसरी परिस्थिति में उसी कौशल के प्रयोग में वह विफल भी हो सकता है। उदाहरण एक किशोर विद्यार्थी अपने अध्यापक से वैश्वीकरण या पर्यावरण प्रदूषण पर चर्चा या विचार-विमर्श करते हुए चिंतन कौशल या संप्रेषण कौशल का समुचित प्रयोग कर रहा है किन्तु सामाजिक विकास से जुड़े किसी विषय पर वह इन कौशलों के उपयोग में असमर्थ रह सकता है। अतः यह स्पष्ट है कि किसी विशेष संदर्भ में संबंधित कौशल के उपयोग करने की दक्षता अर्जित करने की प्रक्रिया को ही सच्चे अर्थों में कौशल विकास कहा जा सकता है।

अनेक जीवन कुशलताओं में से हम सब में कुछ कुशलताएँ तो हैं लेकिन बहुत सी कुशलताएँ ग्रहण कर विकसित कर सकते हैं। इन कुशलताओं को पाने या बढ़ाने के लिए हमें सुरक्षित और अच्छे वातावरण तथा दूसरों के सहयोग की जरूरत है। स्वस्थ लोग ही किसी देश की सबसे बड़ी पूंजी है। पूर्ण स्वास्थ्य का अर्थ है- शारीरिक, मानसिक व सामाजिक तौर पर स्वस्थ होना। इसके लिए जब स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी की जरूरत तो है परन्तु दूसरों के साथ सम्बन्ध जोड़ने और प्रभावी सम्प्रेषण या अपनी बात कहने की कला की भी जरूरत है। सामाजिक कुशलताएँ हमें परिवार, मित्रजन और समाज के सभी वर्गों के साथ सकारात्मक काम करने में योगदान देती है। सोच समझ कर निर्णय लेने और जिम्मेदारी से उन्हें निभाना अच्छे किशोर और नागरिक की पहचान है। चिन्तन कुशलताएँ जैसे स्वजागरूकता, विवेचनात्मक चिन्तन, समस्या समाधान और निर्णय लेने की क्षमताएँ हमें सही लक्ष्य की ओर जाने में मदद करती है। सामाजिक कुरीतियों को समझने और मिलकर निवारण करने में भी चिन्तन कुशलताएँ मदद करती है। किशोरावस्था में समूह दबाव के कारण गलत रास्ते पर जाने की सम्भावनाएँ बढ़ जाती है। ऐसे में स्वयं की भावनाओं से जूझने तनावों का सामना करने और न करने की कुशलताएँ आगे बढ़ने में सहायक होती है। हमारे वातावरण में कई संसाधन और सुविधाएँ उपलब्ध है। अतः इनका प्रयोग करने के लिए जीवन कुशलताओं की जरूरत है।

जीवन का एकाकीपन सन्तुष्टि प्रदान करने वाले रचनात्मक कार्यों से परिपूर्ण होता है, न कि भौतिकता की चकाचौंध से स्वयं के बारे में चिन्तन, परिवार व समाज के बारे में चिन्तन तथा चिन्तन के पश्चात् सही निर्णय लेने की क्षमता जीवन कौशल शिक्षा प्रदान करती है। मशीनी युग में दूसरे के दर्द को अपना दर्द समझने की अनुभूति भी जीवन कौशल शिक्षा प्रदान करती है। तदनुभूति जीवन कौशल शिक्षा का प्रतिफल है। अनन्य समस्याओं के समाधान की सार्थक व परिणामकारी तलाश जीवन कौशल शिक्षा में अन्तर्निहित है। मूल्यों व संस्कृति की सुरक्षा के साथ अपेक्षित ज्ञान प्रदान करने की दक्षता जीवन कौशल शिक्षा में अन्तर्निहित है। इस प्रकार जीवन कौशल शिक्षा शिक्षार्थी के लिए जानकारियों व दक्षताओं का प्रकाश स्तम्भ है। अतः यह कहा जा सकता है कि जीवन कौशल शिक्षा व्यक्ति में एक ऐसी क्षमता विकसित कर सकती है

जिसके द्वारा वह अपनी जिन्दगी की आवश्यकताओं और चुनौतियों का प्रभावी रूप से सामना कर सकता है। जीवन में असंख्य कौशल होते हैं, फिर भी जीवन कौशल शिक्षा निम्नलिखित दस प्रमुख कौशलों का एक समूह है-

1. अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध	2. सृजनात्मक चिन्तन	3. विवेचनात्मक चिन्तन
4. स्वजागरूकता	5. भावनाओं से जूझना	6. प्रभावी सम्प्रेषण
7. समस्या समाधान	8. निर्णय लेना	9. तनावों से जूझना
10. तदनुभूति		

प्रत्येक शोधकार्य के कुछ निर्धारित उद्देश्य होते हैं जिनके माध्यम से अनुसंधानकर्ता अपने लक्ष्य की प्राप्ति करता है। इसके लिए प्रत्येक शोधकार्य में तथ्यों के आधार पर यह आवश्यक है कि शोधकार्य को अंतिम स्वरूप प्रदान करने के लिए विशेष निष्कर्ष व परिणाम प्राप्त किया जाए। बहुत अधिक तथ्यों के आधार पर यह कठिन हो जाता है कि उन्हें सारांश प्रदान कर उचित निर्णय लिए जाए।

शोधकार्य में तथ्यों के विवेचन एवं विश्लेषण के बाद जो भी परिणाम प्राप्त होते हैं, उनके आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं और उनका सामान्यीकरण किया जाता है जिससे कि सामान्य व्यक्ति में इनको सरलता से समझ सकें।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता द्वारा सम्पूर्ण न्यादर्श हेतु प्रयुक्त व्यापक दृष्टिकोण, तर्कसंगत विचारों तथा निरीक्षण करते हुए संकलित आँकड़ों के विश्लेषण, विवेचन के आधार पर निष्कर्ष निकाले हैं तथा प्रस्तुत शोधकार्य में जो समस्या आई उसे शोधकर्त्ता द्वारा उसी के आधार पर सुझाव प्रस्तुत अध्याय में देने का प्रयास किया गया है।

प्रत्येक शोधकर्ता इस तथ्य से भली-भाँति परिचित होता है कि निष्कर्षों के अभाव में प्रत्येक शोधकार्य अधूरा समझा जाता है। ये निष्कर्ष निष्पक्षभाव से निरूपित किए जाते हैं। निष्कर्ष निरूपण में निष्पक्षता अत्यंत अनिवार्य होती है। इससे निष्कर्षों की विश्वसनीयता, वैधता, शुद्धता तथा सत्यता में वृद्धि होती है।

शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे निष्कर्ष मूल्यवान, उपयोगी व महत्त्वपूर्ण होते हैं। यह शोधकार्य का अंतिम परन्तु आवश्यक बिन्दु होता है।

1.2 अध्ययन की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता

मनुष्य होना अपने आप में जीवन कौशल शिक्षा की आवश्यकता को जन्म देता है। अन्य जीव अपनी नैसर्गिक क्षमताओं को स्वतः ही पा लेते हैं, पर जो मानव होने का मतलब है वह हमारी भाषा प्रयोग करने की क्षमता, तर्क करने की क्षमता, स्वभाव होने की क्षमता आदि करती कि सभी मानव इन विशिष्ट गुणों से परिपूर्ण होंगे। हमें जाग्रत होना पड़ता है, हमें अपनी क्षमताओं का प्रयोग करना सीखना पड़ता है। वास्तव में मानव शिशु इतने होते हैं कि उन्हें खुद के भरोसे छोड़ दिया जाये और दूसरों का मार्गदर्शन और सहायता न मिले तो वे उन मूलभूत क्षमताओं को भी हासिल नहीं कर पायेंगे जो उनके के लिए है। इसलिए हमें जरूरत होती है- जीवन कौशल शिक्षा की। आज के इस बदलते परिपेक्ष में रुढ़िवादी शिक्षा पद्धति ने अपना स्थान खो दिया है, वरन् शिक्षा क्षेत्र में तकनीक का समावेश हो गया है। आज जहां एक ओर विद्यार्थी कहीं ज्यादा कुशल एवं बुद्धिमान है वहीं दूसरी ओर निरन्तर ऐसी खबरें भी सामने आती हैं जहाँ हम देखते हैं कि छोटे-छोटे बच्चे तनाव ग्रस्त हो गए हैं, यह शोधकर्ता का कहना है कि एक अच्छा शिक्षक वही है जो सिर्फ अपने विषय वस्तु की बेड़ियों में न बंधा होकर विषय ज्ञान एवं विषय वस्तु को विद्यार्थी के सहज उपयोग का साधन बना दे। जब ऐसी खबरें आती हैं कि किसी विद्यार्थ ने तनाव में आकर आत्महत्या कर ली। कहीं ना कहीं इसके जिम्मेदार समाज के साथ-साथ वह शिक्षक भी है। जो बाल्यकाल में उस विद्यार्थी की नींव मजबूत न कर पाए। नींव से मेरा अभिप्राय शैक्षिक उपलब्धि से नहीं बल्कि सहपाठ्यक्रम गतिविधियों से है। हमें बचपन से ही विद्यार्थियों को एक अच्छा जीवन जीने की विधाएँ

सिखानी होगी। बाल्यकाल से ही विद्यार्थी को आत्मज्ञान का बोध एवं उचित सामाजिक कौशल सिखाना होगा। हर एक बच्चे को खास समझना होगा एवं प्रभावशाली वार्तालाप तथा निर्णय क्षमता जैसे मूल तत्वों को विद्यार्थी जीवन में ढालना होगा। यदि हर शिक्षक इन दस जीवन कौशल रूपों को विद्यार्थी में समावेश करा दे तो सिर्फ विद्यार्थी ही देश व समाज का चरित्र निर्माण होगा। तथा खुशी सूचकांक में भारत का स्थान मजबूत होगा।

हम सभी अपने जीवन काल में किशोरावस्था का अनुभव करते हैं। बतौर एक युवा हम अपनी समस्याओं, सुविधाओं, तनाव तथा उत्तेजना को याद कर सकते हैं। आज कल के किशोर-किशोरियाँ अधिक जटिल संसार में रह रहे हैं। जिसके परिणामस्वरूप तनाव बढ़ गया है, यह सीधे तौर पर उनके स्वास्थ्य से सम्बंधित है। जीवन कौशल का ज्ञान तथा उनका उपयोग किशोरों को तनाव से निपटने तथा जीवन में मौजूद चुनौतियों से निपटने में प्रभावी हो सकता है। जीवन कौशल का दृष्टिकोण न केवल ज्ञान बांटने पर लक्षित है, अपितु इसका लक्ष्य व्यवहार को बदलना तथा अन्तर्वैयक्तिक कौशल को विकसित करना है। जिससे युवाओं में बेहतर स्वस्थ चयन करने नकारात्मक दबावों का विरोध करना, तथा जोखिम पूर्ण व्यवहार से बचने के उत्तरदायित्व की क्षमता को बढ़ाया जा सके। पिछले कुछ वर्षों के दौरान शिक्षण कार्यक्रम में जीवन कौशल के विकास की ओर ध्यान केन्द्रित किया है, जिसने विश्व भर में किशोरों और युवाओं के प्रजनन और सेक्सुअल स्वास्थ्य में सुधार की ओर योगदान किया है। जीवन कौशल की शिक्षा युवाओं का अधिकार है, क्योंकि यह उन्हें ज्ञान देती है, और उन्हें स्वयं को शोषण, अवांछित गर्भधारण, यौन संक्रमण तथा एच.आई.वी., एड्स से बचाव करने हेतु उचित कौशल प्राप्त करने योग्य बनाती है।

छात्र-छात्राओं का किशोरावस्था महत्वपूर्ण पड़ाव है, जहां उनमें तेजी से शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास होता है। इस विकास को जीवन कौशल शिक्षा के माध्यम से वैज्ञानिक बदलाव के साथ-साथ सकारात्मक सोच विकसित करने से युवों में गुणात्मक चेतना जाग्रत करने में मदद मिल सकती है। जीवन कौशल शिक्षा का महत्व भी इसलिए है कि यह स्कूली शिक्षा में युवा प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य पर शैक्षिक गुणवत्ता को दर्शाता है। जीवन कौशल शिक्षा व्यवहार परिवर्तन अथवा व्यवहार विकास का मार्ग है। जीवन कौशल में वास्तव में ऐसी योग्यताएँ हैं, जिनके द्वारा किशोर विद्यार्थी को अपने दिन-प्रतिदिन की समस्याओं तथा आवश्यकताओं को सुलझाने की क्षमता को बढ़ावा मिलता है। अतः इस प्रकार जीवन कौशल शिक्षा किशोर विद्यार्थियों को सशक्त बनाती है।

शोधकार्य का औचित्य समझे बिना शोधकार्य सम्पादित करना न्यायसंगत नहीं होगा। इस दृष्टि से इसका औचित्य एवं महत्व निम्न तर्कों पर आधारित है-

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा की आवश्यकता, समस्या, चुनौतियों का अध्ययन विकास की दृष्टि से रोचक होगा।

2. क्षेत्रीय भिन्नता (ग्रामीण व शहरी) पर जीवन कौशल शिक्षा भूमिका का विस्तृत अध्ययन करना आवश्यक है तथा यह क्षेत्रीय भिन्नता जीवन कौशल शिक्षा को किस प्रकार प्रभावित करती है। इसका अध्ययन करना आवश्यक है।

3. संबंधित साहित्य की सामान्य जानकारी के दौरान ज्ञात हुआ है कि इस विषय पर तथा जिले में क्षेत्रीय भिन्नता, लिंगभेदानुसार तथा बुद्धि विद्यार्थियों पर स्वतंत्र शोधकार्य किसी भी शोधार्थी ने नहीं किया है। अतः विषय की महत्ता सिद्ध होती है।

4. शिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए ऐसे शोधकार्य की महत्ता है क्योंकि राज्य सरकार एवं अन्य अभिकरण शैक्षिक योजना निर्माण में प्राप्त दत्तों एवं शोधकार्य की उपलब्धि से लाभान्वित हो सकेंगे।

5. उच्च माध्यमिक स्तर, किशोरावस्था की परिपक्वता का प्रारंभ है। यदि इस स्तर तक विद्यार्थी में अध्ययन के प्रति सही व सृजनात्मक रूचि विकसित हो जाए तो राष्ट्र के लिए अच्छे नागरिकों की कमी न रहेगी। इस दृष्टि से यह शोधकार्य नितांत आवश्यक और महत्वपूर्ण है

6. वर्तमान में जो अराजकता एवं तीव्र सामाजिक असन्तोष है वह युक्तियुक्त शिक्षा के उद्देश्य प्राप्त न कर सकने के कारण ही है। आज का युवा शिक्षित होते हुए भी अशिक्षित है। यदि शिक्षा का प्रारम्भिक अवस्था को सही मार्गदर्शन नहीं दिया गया तो निसंदेह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की नींव कमजोर तथा पतन की ओर अग्रसित हो सकती है। क्योंकि इस क्षेत्र में इस प्रकार के अनुसंधान कार्य अभी तक नहीं हुए हैं और न कभ यह जाना गया है कि वर्तमान में दी जा रही जीवन कौशल शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता है अथवा नहीं, यह जानना अत्यंत आवश्यक है।

जीवन कौशल अपनी सरलता और रोचकता के कारण मानव मन में जिज्ञासा का भाव उत्पन्न करता है। जीवन कौशल शिक्षा को आज पाश्चात्य विद्वानों ने भी स्वीकार कर लिया है। विभिन्न देशों में जीवन कौशल पर शोधकार्य चल रहे हैं। भारत में कई राज्यों में स्कूली शिक्षा व महाविद्यालयी शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षण अनिवार्य है। यह शोध जीवन कौशल को व्यावहारिक रूप में अपनाने में सहायक सिद्ध होगा। ऐसा शोधकर्ता का विश्वास है। साथ ही जीवन कौशल शिक्षा शोधकर्त्ता की रूचि से सम्बन्धित है।

1.3 शोध का महत्व:

आधुनिक परिवेश में बालक अपने व्यवहारिक आचरण को भूलता जा रहा है बालक को किस प्रकार का आचरण अपने समाज एवं संगठन के साथ करना चाहिए इसका ज्ञान उसे नहीं है क्योंकि वर्तमान समय में माता-पिता दोनों ही व्यवसाय करते हैं। वे अपने बालक व बालिका पर कोई ध्यान नहीं दे पाते हैं तथा वे मात्र अंकुश अधिक लगाते हैं। ऐसे में बालक सामान्य जीवन को अवसादमय बना लेते हैं तथा आने वाली समस्याओं से शीघ्र घबरा जाते हैं अतः उन्हें इस दिशा में जागरूक बनाने की आवश्यकता है ताकि वे दैनिक जीवन में आने वाली कठिनाइयों तथा समस्याओं का प्रभावी समाधान खोज सके। इसके लिए उनमें ऐसी क्षमताओं का विकास किया जाये ताकि वे समस्या का हल शीघ्र कर सके इसके लिए जीवन कौशल शिक्षा उत्तम उपाय है।

वर्तमान शिक्षा का स्वरूप भी ऐसा है जो बालक में बौद्धिक स्तर पर विषय वस्तु को रटने में सक्षम हो जाता है परन्तु वह स्व-चिन्तन, सामाजिक कार्यों में दक्षता और व्यवहार में कुशलता नहीं ला पाता है। ऐसी स्थिति में बालक के सामने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती है। कि वह अपनी समस्या को स्वयं अकेले दूर नहीं कर पाता है तथा उसे किस प्रकार कार्य व्यवहार तथा आचरण एवं निर्णय लेना चाहिए इसका ज्ञान उसे नहीं होता है। इस प्रकार करणीय तथा अकरणीय कार्यो का ज्ञान उसे नहीं है इसी कारण बालक में सही कुशलताओं तथा क्षमताओं का विकास पूर्णतया नहीं हो पाता है।

वर्तमान समय में बालक के अनिर्णित व्यवहार को देखते हुए उसमें कुशलताओं व क्षमताओं का विकास करना आवश्यक है इस हेतु पाठ्यक्रम में जीवन कौशल शिक्षा जैसे विषय को जोड़ा गया है यह जीवन कौशल शिक्षा की सही दिशा निर्देशन का कार्य करती है तथा बालक को अर्थपूर्ण कार्यों को करने की प्रेरणा प्रदान करती है। यह शिक्षा बालक को दिशा निर्देशन देते हुए उसे करणीय तथा अकरणीय का ज्ञान कराती है।

शिक्षक बालक को शिक्षा में विभिन्न प्रकार के कुशलतओं व क्षमताओं का विकास शिक्षा के माध्यम से करता है। घर से बाहर के वातावरण में वहीं एकमात्र इकाई ऐसी है जो बालक को समूह के कार्यों हेतु समस्या के कार्यों हेतु, मानवोपयोगी कार्यों हेतु प्रेरित करते उसे सही दिशा बोध का ज्ञान करवाता है। इसलिए पाठ्यक्रम में जोड़े गये इस जीवन कौशल शिक्ष से यह कार्य आसानी से हो रहा है या नहीं? तथा क्या छात्र विषय के प्रति जागरूकता रखते हैं यह जानने का प्रयास किया जाता है।

बालक सामाजिक प्राणी है वह अपने समाज परिवार से प्रेरित होकर अपना विकास करता है। वह समाज के लघु रूप विद्यालय के साथ-साथ अभिभावकों से हर कदम पर शिक्षा प्राप्त करता है। माता-पिता के द्वारा ही बालक में विभिन्न कुशलताओं व दक्षताओं का विकास किया जाता है।

विद्यालय में समावेशित किये गये इस नये विषय कौशल के प्रति क्या धारणा रखते हैं? यह जानने का प्रयास किया जायेगा। साथ ही यह भी जानने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया जायेगा कि क्या बालक इस विषय वस्तु को पढ़कर अपने जीवन में आने वाली समस्या तथा चुनौतियों से स्वयं संघर्ष कर पाता है या नहीं? क्या उसे इस स्थिति में अपने अभिभावकों की आवश्यकता है अथवा नहीं? यह जानने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया जायेगा।

वर्तमान समय में जबकि माता-पिता दोनों ही नौकरी करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में यदि बालक एवं बालिकाएँ अपने भीतर ऐसे क्षमताओं का विकास नहीं करेंगे जो उन्हें आत्मनिर्भर बनाये तो वे सार्थक ढंग से जीवन नहीं जी सकेंगे। अतः उन्हें इस दिशा में जागरूक बनाने की जरूरत है जिससे कि वे अपने दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं के प्रभावी समाधान खोज सकें। जीवन में यह सरलता कौशलों के प्रयोग से ही संभव हो।

"जीवन काल से तात्पर्य दैनिक को द्वारा समुचित ढंग से प्रयोग लाना ही है। जीवन कौशल ज्ञान, अभिव्यक्ति मूल्यों को वास्तविक योग्यताओं में बदलने योग्य बनाती है, अर्थ क्या करें? और कैसे करें? इसका ज्ञान होता है।

जीवन कौशल वह क्षमता है जो व्यक्ति को घर तथा बाहर दोनों वातावरण से अच्छा सामंजस्य स्थापित करने में मदद करती है तथा व्यक्ति की क्षमताओं को इस योग्य बनाती है कि वह जीवन की चुनौतियों से भली प्रकार से सामना कर सके और स्वयं के व्यक्तित्व के स्वरूप को खण्डित होने से बचाये रखे।

आज के किशोर-किशोरियाँ भावी नागरिक हैं अतः उन्हें भावी जीवन के लिए तैयार करना आवश्यक है। अतः उन्हें व्यावहारिक कौशलों की शिक्षा दी जाये जिससे वह स्वयं के प्रति जागरूक हो जाये तथा सकारात्मक दिशा में परिवर्तन कर सके।

शिक्षा वही साक्ष है जो बालक को समाजोपयोगी, राष्ट्रपयोगी एवं सम्पूर्ण मानवता के लिए उपयोगी बनाने में सहायक होती है। क्योंकि बालक का सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है। अतः इस तकनीकी शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा को भी जोड़ दिया जाये तो बालक कार्यों से ही आकार रूप दे सकेगा। वस्तुतः जीवन कौशल एक ऐसा माध्यम है जो क्षमताओं, भावनाओं एवं संवेदनाओं के साथ समन्वय एवं संतुलन पैदा करने की क्षमता प्रदान करती है। वर्तमान में बालक के कार्यों के प्रति करणीय तथा अकरणीय स्थिति को देखते हुए इस प्रकार के विषय को पाठ्यक्रम में लाया गया है जो कार्य करने की दक्षता व कुशलता का विकास करता है।

जीवन कौशल शिक्षा माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर बालकों पर क्या प्रभाव डालती है। इसका पूर्व में अध्ययन किया गया है। इसी से प्रभावित होकर शोधार्थी ने जीवन कौशल सीखने वाले छात्रों की जागरूकता कैसी है? इनको जानने का प्रयास किया जायेगा। इसलिए पाठ्यक्रम में जोड़े गये इस जीवन कौशल शिक्षा विषय के बारे में उसकी जागरूकता कैसी है तथा इससे बालक में किन क्षमताओं का विकास पूर्णरूपेण होता है या नहीं यह जानना आवश्यक है। बालक केवल विद्यालय में ही शिक्षा ग्रहण नहीं करता। इससे अधिक वह अपने परिवार से भी शिक्षा ग्रहण करता है।

बालक जीवन के प्रारम्भिक काल से ही अपने माता-पिता से जीवन कौशल सीखता है तथा उनका विकास भी करता है। क्या बालक अभिभावक के बताये गये जीवन कौशल के दिशा निर्देशानुसार कार्य करता है? तथा पाठ्यक्रम द्वारा जीवन कौशल शिक्षा बालक को

दी जा रही है। तथा वह उचित है? बच्चों की उसके प्रति क्या विचार है तथा कैसी जागरूकता है यही जानने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी छात्र ने शोध हेतु इस विचार को केन्द्र बिन्दु मानकर समस्या का चयन किया है।

1.4 संबंधित विषय का अध्ययन

श्रीवास्तव (2003) ने सामाजिक सामाजिक विज्ञान का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया.

इस अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य थे:-

1. कैसे सामाजिक सामाजिक विज्ञान के तत्वों को समाहित करने के कौशल का विकास किया जाय।

2. सामाजिक वृद्धि के कारण होने वाले पर्यावरणीय प्रदूषणों को कैसे कम किया जाय।

3. सामाजिक वृद्धि के प्रभाव को मानव जीवन में देखना।

इस अध्ययन के लिए 2 सरकारी स्कूलों का चयन किया गया और छात्रों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। प्रदत्त संग्रह के लिए शोधकर्त्ता ने स्व निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया। इस अध्ययन के लिए 280 छात्र-छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया।

परिणाम:-

छोटे परिवार के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति के निर्माण के लिए सामाजिक सामाजिक विज्ञान एकमात्र व्यवस्थित उपाय है। साथ ही तकनीकी विकास के कारण उत्पन्न समस्याओं के समाधान के लिए पोषाहार स्तर में सुधार के लिए पर्यावरण संरक्षण के लिए, महिलाओं को समाज में उचित स्थान प्रदान करने के लिए प्रचार-प्रसार माध्यमों के द्वारा उत्पन्न जिज्ञासाओं के समाधान के लिए किशोरावस्था की अतिरिक्त शक्ति के सदुपयोग के लिए तथा शैक्षिक कार्यक्रम की आवश्यकता की पूर्ति सामाजिक सामाजिक विज्ञान करती है। वर्तमान समाज के लिए सामाजिक सामाजिक विज्ञान एक आवश्यक आवश्यकता के रूप में प्रतिष्ठित होने योग्य है।

वहल (2002) ने वर्तमान में सामाजिक सामाजिक विज्ञान के महत्व का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य थे-

(1) व्यक्ति व कुटुम्ब पर बढ़ती हुई सामाजिक के प्रभाव को समझना एवं पारस्परिक सहकार और उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना।

(2) बढ़ती हुई सामाजिक की विषम परिस्थिति का पर्यावरण पर प्रभाव स्पष्ट करना।

(3) सामाजिक शिक्षण सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर सामाजिक का जो प्रभाव पड़ता है उसका अध्ययन एवं स्पष्टीकरण।

इस अध्ययन के लिए समाज के शिक्षित वर्गों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। प्रदत्त संग्रह के लिए स्वयं निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इसके लिए यादृच्छिक विधि से कुल 150 परिवारों का चयन किया गया।

परिणामः

सामाजिक सामाजिक विज्ञान संबंधी केन्द्रीय और प्रांतीय विभागों को इस कार्यक्रम को प्रौढ़ सामाजिक विज्ञान के साथ जोड़ देना चाहिए और प्रौढ़ों को लिखने, पढ़ने सामान्य जीवन को जानकारी अपने अधिकार एवं कर्तव्यों की जानकारी के साथ-साथ उन्हें सामाजिक वृद्धि के

प्रति जागरूक करना चाहिए। कविता (2002) ने सामाजिक संबंधी मुद्दों के संबंध में विद्यार्थियों के ज्ञान एवं अभिवृत्ति का अध्ययन किया। उन्होंने विद्यार्थियों में सामाजिक सामाजिक विज्ञान के प्रति निम्न स्तर का ज्ञान एवं अभिवृत्ति का पाया।

मिश्र (2001) ने सामुदायिक विकास पर सामाजिक वृद्धि के दुष्प्रभावों का नियंत्रण पर अध्ययन किया।

इस अध्ययन के उद्देश्य थे-

1. जनांकिकी के आंकड़ों का संगठन तथा उनकी व्याख्या के ज्ञान का विकास करना।
2. परिवार एवं राज्य की समृद्धि के मानक को जीवन-दर्शन बनाने की क्षमता का विकास करना।
3. मानव जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि विभिन्न पहलुओं तथा पारिस्थितिकी पर सामाजिक वृद्धि के कुप्रभावों का ज्ञान विकसित करना।
4. अंध विश्वास, सामाजिक रूढ़िवादिता, परम्परागत धारणाओं आदि को दूर करने की क्षमता का विकास करना।

इस अध्ययन के लिए विभिन्न समुदायों के सदस्यों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। प्रदत्त संग्रह के लिए स्वयं निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। अध्ययन के लिए यादृच्छिक विधि से 200 लोगों का चयन किया गया।

परिणामः-

देश की सामाजिक में हो रही वृद्धि के कारण विकास के पथ पर निरंतर सार्थक एवं सफल कदम बढ़ाने के बावजूद हमें अपेक्षित लाभ नहीं हो पा रहा है। सामाजिक वृद्धि पर नियंत्रण ही विभिन्न सामाजिक बुराईयों तथा आर्थिक कठिनाईयों से मुक्ति का माध्यम है। इस हेतु सामाजिक सामाजिक विज्ञान कार्यक्रम एक सार्थक प्रयास हो सकता है।

अग्रवाल (2001) ने सामाजिक वृद्धि, विकास और महिला साक्षरता का अध्ययन किया।

इस अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य थे

1. महिलाओं की शैक्षिक सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य एवं पोषण की स्थिति को जानना।
2. महिलाओं के साक्षरता स्तर को देखना।
3. सामाजिक वृद्धि का प्रभाव महिलाओं पर देखना।
   इस अध्ययन के लिए महिलाओं के एक वर्ग का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया प्रदत्त संग्रह के लिए स्वयं निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। अध्ययन के लिए यादृच्छिक विधि के द्वारा 120 महिलाओं का चयन किया गया।

परिणामः

महिलाएं सामाजिक नियंत्रण संबंधी साधनों, विधियों कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से अपनाकर दूसरों को इससे अवगत कराने का प्रयास करेंगी जिससे सामाजिक नियंत्रण में सहयोग प्राप्त होगा। सीमित सामाजिक होने से परिवार की समुचित देखभाल सामाजिक शिक्षा एवं सुरक्षा प्राप्त हो सकेगी और देश का सम्पूर्ण विकास होगा।

पांडेय (2000) ने सामाजिक सामाजिक विज्ञान और समाज का अध्ययन किया।

इस अध्ययन के उद्देश्य थे-

1. समाज पर सामाजिक वृद्धि के प्रभाव को देखना।

2. सामाजिक सामाजिक विज्ञान के प्रभाव को समाज पर देखना।

इस अध्ययन के लिए समाज के सभी वर्गों में से यादृच्छिक विधि से प्रतिदर्श का चुनाव किया गया।

अध्ययन के लिए शोधकर्त्ता द्वारा स्व निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रदत्त संग्रह के लिए यादृच्छिक विधि के द्वारा सभी वर्गों में से 250 लोगों का चयन किया गया है।

1.5 अध्ययन की समस्या

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

1.6 शोध के उद्देश्य:

किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व यह आवश्यक हो जाता है कि उसके उद्देश्य को निर्धारित कर लिया जाए। उद्देश्य निर्धारण के बिना कार्य को आगे बढ़ाने तथा समुचित रूप से पूर्ण करना असंभव है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए है :-

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की लिंगभेदनुसार जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की क्षेत्रीय भिन्नतानुसार जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

4. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धिस्तरानुसार जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

5. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत पिछड़े वर्ग, दलित वर्ग एवम् सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों को जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता का अध्ययन करना।

1.7 शोध की परिकल्पना

प्रस्तावित शोध अध्ययन के परिकल्पनाएं निम्नलिखित है-

H1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

H2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

H3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धिस्तरानुसार जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

H4. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत पिछड़े वर्ग, दलित वर्ग एवम् सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों को जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

H5. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुद्धिस्तर एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं है।

1.8 शोध विषय के प्रयुक्त प्रत्ययों का परिभाषीकरण:

1. उच्च माध्यमिक विद्यालय

वे विद्यालय जिनमें कक्षा 11वीं व 12वीं के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं।

2. राजकीय विद्यालय

ऐसे विद्यालय जो राज्य सरकार के द्वारा संचालित किए जाते हैं, उन्हें राजकीय विद्यालय कहा जाता है।

3. जागरूकता

जागरूकता से अभिप्राय है कि किसी विषय के सम्बन्ध में हम कितनी जानकारी रखते हैं तथा उस विषय से सम्बन्धित ज्ञान को हम अपने दैनिक जीवन की समस्याओं के निराकरण में उपयोग करते हैं, जागरूकता कहलाती है।

1.9 अध्ययन प्रविधि

प्रस्तुत अनुसंधान हेतु शोधकर्त्ता ने वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा। क्योंकि शोध के स्वतंत्र व आश्रित चरों तथा समस्या को ध्यान में रखते हुए यह विधि सर्वोत्तम है।

1.10 शोध अध्ययन की परिसीमाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में बिहार के बेगुसराय जिले के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के जीवन कौशल शिक्षा का अध्ययन करके विद्यार्थियों के विकास के लिए सुझाव तक ही सीमित है, इसका परिसीमन इस प्रकार किया जाएगा -

1. प्रस्तावित शोध अध्ययन के लिए बेगुसराय जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को चुना जाएगा।

2. समय व धन आदि के अभाव में प्रस्तुत अध्ययन के लिए 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें ग्रामीण व शहरी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को शामिल किया जाएगा।

3. अध्ययन बेगुसराय जिला के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालयों तक ही सीमित रखा जाएगा।

4. बिहार राज्य के बेगुसराय जिले के कक्षा 11वीं एवं 12 वीं के कुल 400 विद्यार्थियों को चुना जाएगा, अर्थात् न्यादर्श में शामिल किया जाएगा।

1.11 शोधकार्य में प्रयुक्त उपकरण

अनुसंधान पर्याप्त उपकरणों के अभाव में पूर्ण नहीं हो सकता क्योंकि प्रत्येक उपकरण एक विशेष प्रकार के आँकड़े एकत्रित करने हेतु प्रयुक्त होता है। अतः प्रस्तुत शोधकार्य में विद्यार्थियों के जीवन कौशल से सम्बन्धित प्रभावों के अध्ययन हेतु निम्न उपकरण उपयोग में लाया जाएगा -

1. स्वनिर्मित उपकरण- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिए जीवन कौशल मापनी का निर्माण किया जाएगा।

2. मानकीकृत उपकरण- श्याम स्वरूप जलोटा द्वारा निर्मित मानसिक योग्यता संशोधित सामूहिक परीक्षा का प्रयोग किया जाएगा।

आवश्यकता अनुसार उपयुक्त एवं प्राप्त मापनी का प्रयोग किया जाएगा

1.12 सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत शोध में निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा -

- मध्यमान (M) समूहों का औसत जानने के लिए प्रयोग किया जाएगा।
- प्रमाप विचलन (S.D.) - समूहों की विचरणशीलता को जानने के लिए प्रयोग किया जाएगा।
- 'टी'-मूल्य (t-Value) दोनों वर्गों में अन्तर जानने के लिए प्रयोग किया जाएगा।
- 'एफ' मान (F-Value) समूहों के मध्यमान की विचलनशीलता एवं समूहों के अन्तर्गत विभिन्न इकाईयों की विचरणशीलता के अनुपात जानने के लिए प्रयोग किया जाएगा।

1.13 परिणाम एवं विवेचना

प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त किए गए परिणामों का उद्देश्य एवं परिकल्पनावार विवरण एवं व्याख्या को प्रस्तुत शोध के अनुसार किया जाएगा।

अध्यायीकरण

शोध प्रबंध मुख्यतः- निम्न अध्यायों में विभक्त किया जायेगा-

प्रथम अध्याय :- प्रस्तावना

द्वितीय अध्याय :- संबंधित साहित्य का अध्ययन

तृतीय अध्याय :- अध्ययन विधि

चतुर्थ अध्याय :- प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

पंचम अध्याय :- निष्कर्ष एवं सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

• अग्रवाल जे.सी. (1906), एजूकेशन रिसर्च एन इंट्रोडक्शन नई दिल्ली. आर्य बुक डिपो।

• आहूजा राम (2001), रिसर्च मेथड्स, जयपुर, रावत प्रकाशन।

• बैली केनेथ डी. (1982), मैथड्स ऑफ सोशल रिसर्च; लंदन, दी फ्री प्रेस

• भटनागर, आर.जी. एंड भटनागर, एम. मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, मेरठ, आर.लाल बुक डिपो।

• इलियट, जे. ब्रिजेज डी (1981), स्कूल एकाउंटिबिलिटी, दि एस. आर.आरसी कैम्ब्रिज एंड

एकांटटीबिल्टी प्रोजेक्ट लंदन ग्रांट मैक इन टायरे।

• कपिल. एच. के. (1962), अनुसंधान विधियों व्यवहारपरक विज्ञानों में आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाउस- आगरा।

• करलिंगर एफ.एन. (1983). व्यावहारिक अनुसंधान के आधार, न्यूयार्क, हाल्ट, रेनहार्ट एंड विसरन।

• मेहरोत्रा, प्रेमनारायण (1962), शैक्षिक सांख्यिकी तथा मापन, कानपुर, साहित्य निकेतन।